पृथ्वी घोषणा पत्र

भूमिका (Introduction)

हम आज ऐसे समय से गुज़र रहे हैं, जो पृथ्वी के लिए खतरों-से भरा है। यह एक ऐसा समय है जहाँ आदमी को पृथ्वी को बचाने के लिए कुछ सोचना पड़ेगा। भविष्य (Future) में आदमी का पृथ्वी पर रहना खतरनाक होगा। इस दुनिया में एक ओर हम मिल कर काम कर रहे हैं, दूसरी ओर पर्यावरण (Environment) से खतरे पैदा हो रहे हैं। हमें आगे बढ़ते हुए इन खतरों को पैदा होने से रोकना है और समाज को एक मानव परिवार बना कर चलना है। हमें अपने इस विकास में आत्मनिर्भर समाज (Self Dependant Society), प्रकृति के प्रति सम्मान (Respect for Nature), मानव अधिकारों (Human Rights) की रक्षा, आर्थिक न्याय (Economic Justice), शान्ति (Peace) का भी ध्यान रखना होगा। यह भी ज़रूरी है कि पृथ्वी का आदमी समाज के प्रति तथा आने वाली पीढ़ियों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को समझे।

हमारा घर - पृथ्वी :

पृथ्वी मनुष्य जाति का निवास स्थान है। यही एक ऐसा ग्रह (Planet) है जहाँ जीवन है। यही पृथ्वी प्रकृति है। प्रकृति ही मनुष्य जाति के लिए जीने की चीज़ें जुटाती रही है।

पृथ्वी पर प्रकृति (Nature) साफ पानी, साफ हवा और वनस्पति (Vegetation) देकर मनुष्य जाति को पालती है। किन्तु आज पृथ्वी का पर्यावरण (Environment) खतरे में है। मनुष्य जाति के सदस्य होने के कारण यह हमारा कर्त्तव्य (Duty) है कि हम मिट्टी की उपजाऊ शक्ति (Fertility) की रक्षा करके पृथ्वी की सुन्दरता को बढ़ाएँ।

वर्तमान दुनिया :

उत्पादन (Production) और वस्तुओं के उपभोग (Use) के तौर तरीकों से पर्यावरण (Environment) नष्ट (Destroy) हो रहा है। प्रकृति की शक्ति (Power of Renewability) कम हो रही है और जीवों का नाश (Destruction) हो रहा है। मनुष्य जातियों में बहस छिड़ गई है। उनके गुट बन गए हैं। इन गुटों में शक्तिशाली गुट शक्तिहीन (Powerless) गुटों के मनुष्यों को नष्ट करने पर तुला है। अमीर गुट गरीब गुट का दुश्मन हो गया है। अमीरी और गरीबी की दूरी बढ़ती

जा रही है। विकास (Development) का भाग गरीब को नहीं मिल पा रहा है। अमीरी और गरीबी के टकराव में सब अधिकार (Rights) अमीरों ने अपने पास रख लिए हैं। इससे जो बुराइयाँ पैदा हुई हैं, वे पर्यावरण (Environment) तथा मनुष्य जाति के लिए खतरा बन गई हैं। ये बुराइयाँ हैं : अन्याय (Injustice), गरीबी, अशिक्षा तथा हिंसा (Violence)। आज इन बुराइयों को समाज से निकालने की आवश्यकता है।

सामने खड़ी चुनौतियाँ (Challenges) :

हमें फैसला लेना ही होगा कि हम पृथ्वी की रक्षा करते हुए एक–दूसरे की रक्षा करें। हम अभी से ऐसा करने की बात नहीं सोचेंगे तो पृथ्वी पर हम तो नष्ट होंगे ही, साथ ही अन्य जीवों, पशु–पक्षियों के नष्ट होने का खतरा बढ़ जायेगा। इस ख़तरे को टालने के लिए हमें अपने रहने की तरीकों को बदलना होगा और ज़रूरतों को सीमित (Limited) करना होगा। भौतिक सामग्री (Luxuries) में कमी लानी होगी। विकास का अर्थ हमें सम्पूर्ण (Complete) मानवजाति की मौलिक (Original) आवश्यकताओं से लेना होगा। आज हमारे पास ऐसा ज्ञान विज्ञान है जो सबकी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है और पृथ्वी को नष्ट करने वाली शक्तियों को भी रोक सकता है। अतः हमें अपनी योजनाओं को लोकोन्मुखी (In Favour of Peoples) और राज्यतंत्रीय (Democratic) बनाना होगा। हमारे सारे कार्यक्रम लोकोन्मुखी होने चाहिए। हम सभी विश्व व्यापियों (Life on Earth) की चुनौतियाँ एक–दूसरे से जुड़ी हैं, अलग नहीं हैं, जैसे – पर्यावरण (Environment) की चुनौती, आर्थिक (Financial), राजनीतिक (Political), आध्यात्मिक (Spiritualism) और सामाजिक (Social) चुनौती। इसलिए हम सबको मिल कर इस का हल निकालना होगा।

उत्तरदायित्व (Universal Responsibility) :

इन अपेक्षाओं (Expectations) को पूरा करने के लिए सार्वजनिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करनी होगी। स्थानीय समाज के साथ–साथ विश्व समाज के साथ के अपने रिश्ते को पहचानना होगा। एक राष्ट्र के साथ–साथ हम लोग एक विश्व के भी नागरिक हैं और मानव तथा इस दुनिया के विशाल जीव–जगत के सुंदर वर्तमान और सुखद भविष्य के प्रति हर व्यक्ति की जिम्मेदारी बनती है। जब हम ब्रह्माण्ड के रहस्य और प्रकृति के द्वारा दिए जीवन के प्रति सम्मान तथा मानवता और प्रकृति में मानव की गौरवपूर्ण उपस्थिति के प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हैं, तब आपसी भाईचारा और बंधुत्व की भावना और मज़बूत होती है।

यह बहुत जरूरी है कि मौलिक सिद्धांतों में आपसी तालमेल हो, जिससे कि आनेवाले समाज के लिए एक नैतिक आधार मिले। अतः मिलजुल कर एक ऐसे सिद्धांत पर हमें केंद्रित होना होगा जिससे जीवन स्तर में समानता दिखे साथ ही उससे व्यक्तिगत, व्यावसायिक सरकारी एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों को दिशा निर्देश मिलें और उनका आंकलन हो सके।

I जीव जगत (Living World) के प्रति सम्मान :

1. **पृथ्वी और जीव जगत की विविधताओं (Varieties) का सम्मान करना होगा।**

   (अ) हमें स्वीकार करना होगा कि सभी जीवधारी (Living Creatures) एक दूसरे के बिना नहीं जी सकेंगे। ये सभी महत्त्वपूर्ण हैं। किसी की भी अवमानना (Ignore) नहीं की जा सकती।

   (ब) हमें हर मनुष्य के स्वाभिमान (Dignity) की रक्षा करनी होगी। उनके बौद्धिक (Intellectual), कलात्मक (Artiistic), नैतिक (Cultural) और आध्यात्मिक शक्तियों (Spiritual Powers) पर विश्वास करना होगा।

2. **विवेक (Knowledge), दया और प्रेम के साथ जीव जगत (Living World) की रक्षा करनी होगी।**

   (अ) प्राकृतिक संसाधनों (Natural Resources) के स्वामित्व प्रबंध (To Administer) तथा प्रयोग (Use) के अधिकारों (Rights) को हाथ में लेने से पहले हमें यह तय कर लेना होगा कि हम पर्यावरण (Environment) को कोई नुकसान न होने देंगे और लोगों के अधिकारों (Rights) की रक्षा करेंगे।

   (ब) अपनी आजादी (Freedom), ज्ञान और शक्ति का विकास (Development) करते हुए हम सबकी भलाई (Wel-being) का ध्यान रखेंगे।

3. **हम लोकतंत्र समाज (Democratic Society) का निर्माण (Construct) करें जो सबके लिए सहयोगी और शांति प्रदान करने वाला हो।**

   (अ) हमें इस बात पर बल देना होगा कि हर सोसाइटी या समाज मानव अधिकारों (Human Rights) की रक्षा करे। हर व्यक्ति को विकास (Development) की आज़ादी हो।

(ब) सामाजिक (Social) तथा आर्थिक न्याय (Economic Justice) को बढ़ावा मिले तथा हर किसी के पास स्थाई (Stable) और सार्थक जीविका (Livelihood) का ऐसा आधार हो जो पर्यावरण (Environment) को नष्ट न करे।

4. **अपने लिए और आने वाले पीढ़ियों (Generations) के लिए भी पृथ्वी की सुन्दरता और उसके संसाधनों (Bounty) को बनाए रखें।**

(अ) हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारा हर कार्य आने वाली पीढ़ी (Generations) की ज़रूरतों के अनुसार हो।

(ब) आने वाली पीढ़ी को उन मूल्यों (Values) परम्पराओं (Traditions) और संस्थाओं (Institutions) के बारे में जानकारी देनी होगी जिससे मानव और प्रकृति में सामंजस्य (Balance) हो।

II प्रकृति में सामंजस्य (Balance with Nature) :

5. **प्रकृति की हर स्थिति में रक्षा तथा उसकी भरपाई (Need) आवश्यक है, जिससे पृथ्वी पर रह रहे जीवों (पशु, पक्षी, मनुष्य) तथा प्रकृति के चक्र (Diversity in Nature) सामंजस्य (Balance) बना रहे।**

(अ) हमें उन सभी स्वपोषी विकास योजना (Sustainable Development) और नियमों को अपना लेना चाहिए जो सभी प्रकार के विकास में सहायक हैं तथा जिनसे पर्यावरण (Environment) की रक्षा होती है।

(ब) पृथ्वी पर सभी जीवों (पशु, पक्षी, मनुष्य) की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। साथ ही वन में रहने वाले जंगली पशुओं तथा सागर में रहने वाले जीवों की रक्षा करनी भी ज़रूरी है। ताकि पृथ्वी की जीवनदायी शक्तियों (Life Support Systems) की रक्षा हो सके।

(स) जो पशु जातियाँ मिट गई हैं (Endangered Species) उनके अवशेषों की खोज को हमें बढ़ावा देना है।

(द) प्राकृतिक प्रजातियों (Native Species) वातावरण (Atmosphere) को नुकसान पहुँचाने वाले कृत्रिम परिवर्तन (Artificial Change) पर रोक लगनी चाहिए तथा कृत्रिम प्रजातियों (Artificial Breed) के विकास पर रोक लगनी चाहिए।

(ब) सामाजिक (Social) तथा आर्थिक न्याय (Economic Justice) को बढ़ावा मिले तथा हर किसी के पास स्थाई (Stable) और सार्थक जीविका (Livelihood) का ऐसा आधार हो जो पर्यावरण (Environment) को नष्ट न करे।

4. अपने लिए और आने वाले पीढ़ियों (Generations) के लिए भी पृथ्वी की सुन्दरता और उसके संसाधनों (Bounty) को बनाए रखें।

(अ) हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारा हर कार्य आने वाली पीढ़ी (Generations) की ज़रूरतों के अनुसार हो।

(ब) आने वाली पीढ़ी को उन मूल्यों (Values) परम्पराओं (Traditions) और संस्थाओं (Institutions) के बारे में जानकारी देनी होगी जिससे मानव और प्रकृति में सामंजस्य (Balance) हो।

II प्रकृति में सामंजस्य (Balance with Nature) :

5. प्रकृति की हर स्थिति में रक्षा तथा उसकी भरपाई (Need) आवश्यक है, जिससे पृथ्वी पर रह रहे जीवों (पशु, पक्षी, मनुष्य) तथा प्रकृति के चक्र (Diversity in Nature) सामंजस्य (Balance) बना रहे।

(अ) हमें उन सभी स्वपोषी विकास योजना (Sustainable Development) और नियमों को अपना लेना चाहिए जो सभी प्रकार के विकास में सहायक हैं तथा जिनसे पर्यावरण (Environment) की रक्षा होती है।

(ब) पृथ्वी पर सभी जीवों (पशु, पक्षी, मनुष्य) की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। साथ ही वन में रहने वाले जंगली पशुओं तथा सागर में रहने वाले जीवों की रक्षा करनी भी ज़रूरी है। ताकि पृथ्वी की जीवनदायी शक्तियों (Life Support Systems) की रक्षा हो सके।

(स) जो पशु जातियाँ मिट गई हैं (Endangered Species) उनके अवशेषों की खोज को हमें बढ़ावा देना है।

(द) प्राकृतिक प्रजातियों (Native Species) वातावरण (Atmosphere) को नुकसान पहुँचाने वाले कृत्रिम परिवर्तन (Artificial Change) पर रोक लगनी चाहिए तथा कृत्रिम प्रजातियों (Artificial Breed) के विकास पर रोक लगनी चाहिए।

(ह) जल, मिट्टी, वन्य संपदा (Forest Products), समुद्री जीव–जन्तु (Marine) ये सब ऐसे संसाधन (Renewable Resource) हैं जिनका बार–बार प्रयोग हो सकता है, फिर भी इनका पालन–पोषण सोच समझकर करना चाहिए जिससे न तो ये नष्ट हों और न हीं पर्यावरण (Environment) को नुकसान पहुँचे।

(ल) हमें खनिज पदार्थ (Mineral Resources) तथा खनिज तेलों का उत्पादन (Production) भी सोच समझकर करना होगा। ये पदार्थ ज़मीन के अंदर सीमित (Limited) मात्रा में हैं। इनका समाप्त होना भी मानव जाति के लिए खतरा है।

6. समुचित तौर तरीकों से पर्यावरण को बचाएँ, तथा इनकी जानकारी प्राप्त करने में सावधानी ज़रूरी है।

(अ) वैज्ञानिक पद्धति (Scientific Knowledge) की कमी के बावजूद वातावरण को किसी भी प्रकार की हानि से बचाना बहुत ज़रूरी है।

(ब) यदि आपका काम पर्यावरण के खिलाफ नहीं है, तो इसके लिए आपके पास ठोस सबूत (Proof) होने चाहिएँ। अगर आपका काम पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है तो इसकी ज़िम्मेदारी से आपको मुँह नहीं मोड़ना है।

(स) हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों का संबंध इंसान द्वारा किए गए कार्यों से हो। इन निर्णयों का प्रभाव लम्बे समय तक के लिए लाभकारी होना चाहिए।

(द) पर्यावरण को दूषित (Pollution) करने वाले साधनों पर रोक लगाना तथा विषैले पदार्थ, विकिरण और प्रकृति के लिए खतरनाक तत्त्वों (Toxic, Radio Active and Hazardous) कार्यों के निर्माण पर पाबंदी लगनी चाहिए।

(ह) ऐसी सैनिक (Millitary) कार्यवाही पर भी रोक लगानी होगी जो पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचाते हैं।

7. उत्पादन (Production), उपभोग (Consumption) और पुनुरुत्पादन् (Reproduction) की ऐसी पद्धति (Ways) को अपनाएँ जिससे पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति (Regenerative Capacity) बनी रहे; मानवीय अधिकारों (Human Rights) की रक्षा हो सके और सार्वजनिक हित (Community Well Being) को भी नुकसान न पहुँचे।

अधिकारों (Human Rights) की रक्षा हो सके और सार्वजनिक हित (Community Well Being) को भी नुकसान न पहुँचे।

(अ) उत्पादन (Production), उपभोग (Consumption) के दौरान काम आने वाले सभी साधनों का उपयोग (Use) इस प्रकार हो कि उनका दुबारा उपयोग हो सके और इस दौरान जो अवशेष (Residual Waste) निकले वह प्रकृति के लिए नुकसान पहुँचाने वाला सिद्ध न हो।

(ब) ऊर्जा (Energy) के प्रयोग में हमें सावधानी बर्तनी होगी। हमें सूर्य और वायु जैसे ऊर्जा के साधनों के महत्व को जानना होगा। ये ऐसे साधन हैं जिनका उपयोग बार–बार किया जा सकता है।

(स) हमें उन तकनीकों के विकास (Development of Technology), प्रयोग और प्रचार को महत्व देना होगा जो पर्यावरण की रक्षा में उपयोगी हो सके।

(द) वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में उनके सामाजिक (Social) तथा पर्यावरण सुरक्षा से जुड़े खर्चों को भी शामिल करना होगा जिससे उपभोक्ताओं (Consumers) को इस बात का अहसास हो सके कि इन वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता (Availability) में पर्यावरणीय (Environmental) और सामाजिक कीमतें (Social Cost) चुकानी पड़ती हैं।

(ह) स्वास्थ कल्याण (Health Care) और सुरक्षा सेवा सबके लिए उपलब्ध (Available) होनी चाहिए।

(ल) हमें ऐसी जीवन पद्धति (Life Styles) को चुनना होगा जो हमारे जीवन स्तर (Quality of Life) को मज़बूत करे और प्रकृति की भी रक्षा करे।

8. **पारिस्थितिकी स्वपोषी (Ecological Sustainability) से जुड़े मुद्दों का गंभीरतापूर्ण प्रचार प्रसार करें जिससे सभी को लाभ हो।**

(अ) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान (Scientific) और तकनीक में सुचारु संबंध विकास और आत्मनिर्भरता ज़रूरी है। विकासशील देशों (Developing Nations) के लिए यह आवश्यक है।

(ब) सभी देशों की संस्कृति (Culture) और आध्यात्मिकता (Spiritual Wisdom) को सुरक्षित रखना है। इससे पर्यावरण और मानव हितों (Human Well Being) की रक्षा होती है।

Wisdom) को सुरक्षित रखना है। इससे पर्यावरण और मानव हितों (Human Well Being) की रक्षा होती है।

(स) इस बात की भी कोशिश करनी होगी कि स्वास्थ (Health) पर्यावरण सुरक्षा (Environment Protection) और आनुवंशिकता (Genetic Information) से जुड़ी आवश्यक और लाभदायक जानकारी लोगों को मिलती रहे।

III सामाजिक और आर्थिक न्याय (Social and Economic Justice) :

9. भौतिकता (Ethical), सामाजिक (Social) और पर्यावरण संरक्षण (Environment Protection) की दृष्टि से गरीबी को निश्चित रूप से दूर करना जरूरी है।

(अ) यह तय करना होगा कि शुद्ध जल, शुद्ध वायु, भोजन, घर और सफाई जैसी सुविधाएँ सभी के लिए हों।

(ब) विकासशील देशों में शिक्षा, तकनीक, सामाजिक और आर्थिक संसाधनों का निरन्तर विकास होना चाहिए तथा उन्हें भारी अन्तर्राष्ट्रीय कर्जों से मुक्ति मिलनी चाहिए।

(स) हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि सभी प्रकार के व्यापार, प्राकृतिक संसाधनों (Natural Resources)के पुनः इस्तेमाल (Reuse) के महत्व को समझें। यदि ऐसे व्यापारों में श्रमिकों से काम लिया जा रहा है तो श्रम नीतियाँ लागू हों।

(द) बहुराष्ट्रीय (Multinationals) कंपनियों और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों (International Financial Organisations) को सार्वजनिक हित (Public Well Being) के काम में आगे आना चाहिए। उनके कामों में पारदर्शिता (Transparency) होनी चाहिए।

10. आर्थिक संस्थानों (Institutions) को हर स्तर पर मानव विकास (Human Development) के लिए संसाधन (Resources) को प्रेरित करना होगा। समानता (Equitable) और आत्मनिर्भरता (Sustainable) को लाना होगा।

(अ) देशीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्थ का समान रूप से विभाजन अपेक्षित है।

(ब) सभी को शिक्षा और आजीविक के साधन मिलने चाहिए तथा उन्हें सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए विशेषकर उन्हें जो इसमें असमर्थ हैं।

उन्हें सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए विशेषकर उन्हें जो इसमें असमर्थ हैं।

(स) उपेक्षित (Ignored), प्रताड़ित (Vulnerable) और पीड़ित (Sufferer) वर्ग की क्षमताओं का विकास करना तथा उन्हें इस ओर प्रेरित करना आवश्यक है।

11. **आत्मनिर्भरता (Sustainable Development) के लिए लैंगिक समानता (Gender Equility) तथा समदृष्टि (Equity) जैसी भावनाओं को अपनाना होगा। शिक्षा (Education), स्वास्थ्य कल्याण (Health Care) और अर्थिक अवसर (Economic Opportunity) सभी को मिलें, इसका प्रयास करना होगा।**

(अ) स्त्रियों और लड़कियों को मानव आधिकार (Human Rights) से अलग नहीं किया जा सकता। उनके खिलाफ हो रहे अत्याचारों को भी रोकना होगा।

(ब) स्त्रियों को पुरुषों के बराबर आर्थिक (Economical), सामाजिक (Social), राजनैतिक (Political) और सांस्कृतिक (Cultural) गतिविधियों में भाग लेने को प्रोत्साहित (Promote) करना होगा।

(स) परिवारों (Families) को मजबूत बनाना होगा। परिवार के सभी सदस्यों के बीच सुरक्षा और प्रेम की भावना का विकास करना होगा।

12. **हमें बिना किसी भेदभाव के उन सभी अधिकारों (Rights) को महत्व देना होगा जो आदमी के सम्मान (Dignity), स्वास्थ्य (Health) और आध्यात्मिक चेतना (Spiritual Well.Being) से जुड़ा है। इसके साथ ही हमें अल्प संख्यक (Minorities) और आदिवासियों (Indigenous People) के अधिकारों (Rights) का भी सम्मान करना होगा।**

(अ) जाति, रंग, लिंग, धर्म, भाषा, राष्ट्र और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर उपजे भेद–भाव (Discrimination) को समाप्त करना होगा।

(ब) हमें आदिवासियों (Indigenous People) के रहन–सहन, जीविका प्राप्त करने के तौर तरीकों भूमि संबंधी अधिकारों और धार्मिक धारणाओं को स्वीकार करना होगा।

(स) समाज के युवा वर्ग (Young People) की भावनाओं को सम्मान और प्रोत्साहन देना होगा। इससे स्वस्थ और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण (Creating Societies) में वे अपना योगदान दे सकें।

और प्रोत्साहन देना होगा। इससे स्वस्थ और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण (Creating Societies) में वे अपना योगदान दे सकें।

(द) सांस्कृतिक (Cultural) तथा आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) के सभी स्थानों की सुरक्षा (Protection) और रख रखाव की ज़िम्मेदारी लेनी पड़ेगी।

IV **लोकतंत्र (Democracy), अहिंसा (Non Violence) और शांति (Peace):**

13. **हमें लोकोन्मुखी संस्थाओं** (Democratic Institutions) **और कार्य योजनाओं को हर स्तर पर मज़बूत करना होगा। उन्हें काम करने के लिए उचित अवसर तथा निर्णय लेने और न्याय प्राप्त करने के अधिकार देने होंगे।**

(अ) सबको पर्यावरण संबंधी व सभी विकास योजनाएँ तथा प्रक्रियाओं (Activities) की सम्पूर्ण जानकारी मिलनी चाहिए।

(ब) हमें स्थानीय (Local), क्षेत्रिय (Regional), तथा अन्तर्राष्ट्रीय (Global) स्तर पर नागरिकों के उत्थान के लिए प्रयास करना होगा।

(स) विचारों के आदान–प्रदान का अधिकार (Freedom of Expression) किसी बात के असहमत होने तथा शांतिप्रर्ण सभा–संगठन (Peaceful Assembly) बनाने का अधिकार सभी को मिलना चाहिए।

(द) कारगर तथा कुशल प्रशासनिक (Effective & Efficient Access to Administration) तथा स्वतंत्र न्याय प्रणाली (Independent Judicial Procedures) की स्थापना ज़रूरी है। वातावरण को प्रदूषण से बचाने और उसके सुधार का प्रयत्न भी आवश्यक है।

(ह) सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से भ्रष्टाचार (Corruption) को हटाना होगा।

(ल) स्थानीय समुदाय (Local Communities) को मज़बूत बनाना होगा। ताकि वे अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक रह सकें।

14. **स्वपोषित विकास (Sustainable Development) के लिए ज्ञान, आदर्श और हुनर जैसे गुणों की आवश्यकता पड़ती है। इन गुणों का समावेश औपचारिक शिक्षा (Formal Education) और जीवन शिक्षा में करना होगा।**

औपचारिक शिक्षा (Formal Education) और जीवन शिक्षा में करना होगा।

(अ) सभी को विशेषकर बच्चों और युवाओं को शिक्षा के अवसर देने होंगे तभी हमारा समाज आत्मनिर्भर हो सकेगा।

(ब) विभिन्न कलाओं, और विज्ञान (Arts, Humanities and Sciences) का लाभ रोजगारोन्मुखी शिक्षा (Sustainability Education) को मिल सके, इसकी व्यवस्था करनी होगी।

(स) सामाजिक और पर्यावरणी चुनौती के प्रति जन जागरण के लिए संचार माध्यमों (Mass Media) की मदद लेनी होगी।

(द) नैतिक तथा आध्यात्मिक (Moral and Spiritual) शिक्षा के बिना हम आत्मनिर्भर नहीं हो सकते, इस बात को भी ध्यान में रखना होगा।

15. **सभी जीवधारियों के प्रति सम्मान तथा सहानुभूति की भावना रखनी चाहिए।**

(अ) हर जीव के प्रति दया की भावना रखनी होगी।

(ब) वन्य प्राणियों का शिकार, उन्हें जाल में फंसाना, जल जीवों को पकड़ना ये सब ऐसे क्रूरताप्रर्ण काम हैं जिससे कष्ट होता है, इसे रोकना होगा।

(स) वैसे प्राणी जो लुप्त प्राणियों (Non-Targeted) की श्रेणी में नहीं हैं, उन प्राणियों की भी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

16. **सहनशीलता (Tolerance), अहिंसा (Non Violence) और शांति (Peace) की संस्कृति को बढ़ावा दें।**

(अ) देश के अन्दर और विभिन्न देशों में रहने वाले विभिन्न संस्कृति और धर्मों के लोगों के बीच सौहार्द (Mutual Understanding), एकता और सहकारिता (Co-operation) की भावना को बढ़ावा देना होगा।

(ब) हिंसात्मक टकराव (Violent conflict) को रोकने के लिए ठोस पहल करनी होगी। पर्यावरण की रक्षा पर आम राय बनानी होगी।

(स) सैनिक संसाधनों का प्रयोग शांति के लिए होना चाहिए। पारिस्थितिकी के पुनर्निर्माण (Restoration) में भी इसका उपयोग हो सकता है।

(द) आण्विक अस्त्रों (Nuclear & Toxic Weapons), जैविक अस्त्रों (Biological Weapons) जैसे विध्वंसक (Mass Destructive) और वातावरण में ज़हर फैलाने वाले अस्त्रों पर रोक लगानी चाहिए।

(ह) पृथ्वी व आकाश (Orbital and Outer Space) का प्रयोग पर्यावरण की सुरक्षा और शांति के लिए होना चाहिए।

(ल) हमें यह मालूम होना चाहिए कि शांति एक सम्पूर्ण प्रक्रिया (Whole ıvess) है। स्वयं की खोज, और यही खोज जब दूसरे लोगों की ओर, दूसरी संस्कृति की ओर, दूसरे जीवधारियों की ओर बढ़ती है और पूरी पृथ्वी से एक जीवंत रिश्ता बन जाता है तो शांति का प्रारंभ होता है।

आगे की राह (The Way Forward):

इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, पर यह एक नई शुरूआत है। इस नवीनीकरण (Renewal) का अर्थ है पृथ्वी के घोषणापत्र से जुड़े सभी वादों के प्रति विश्वास। सुखद भविष्य के लिए हम उन सभी मूल्यों और आदर्शों को अपनाना होगा, जो पृथ्वी के घोषणा पत्र का लक्ष्य है।

इसके लिए हमें दिल और दिमाग को बदलना होगा। मौखिक सहयोग और परस्पर निर्भरता (Universal Inter Dependence) और सार्वभौम उत्तरदायित्त्व (Universal Responsibility) भी ज़रूरी है। हमें एक स्थाई और स्थिरतापूर्वक विकास करने वाली जीवन पद्धति को स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित करना होगा। विश्व की सांस्कृतिक विविधता हमारी सबसे बड़ी पूंजी है क्योंकि इसी में से इस दृष्टि के अनुकूल रास्ते मिलेंगे। हमें अन्तर्राष्ट्रीय संवाद बढ़ाना होगा और उसके क्षेत्र का विस्तार करना होगा, जिसमें से यह पृथ्वी घोषणापत्र निकाला है, क्योंकि सत्य को पाने के लिए और बुद्धि के विकास के लिए यह जो सांझा प्रयास चल रहा है उससे हमें बहुत कुछ सीखना है। जीवन में महत्वपूर्ण मूल्यों के बीच विरोध प्रकट होते रहते हैं, चयन मुश्किल हो जाता है पर हमें अनेकता में एकता लानी होगी। आजादी का उपयोग सार्वजनिक भलाई के लिए हो, इसकी व्यवस्था करनी होगी। छोटे–छोटे लक्ष्यों का प्रयोग बड़े लक्ष्यों तक पहुँचने में करना होगा। प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, संगठन और समुदाय को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी। कला, विज्ञान, धर्म, शिक्षण संस्थाएँ,

संचार व्यवस्था, व्यापार, सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों की रचनात्मकता में विश्वास करना होगा। कार्यशील प्रशासन के लिए सरकार, समाज और वाणिज्य में तालमेल जरूरी है। विश्वव्यापी स्वपोषी समाज का निर्माण करने के लिए विश्व के सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति आस्था प्रकट करनी होगी और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के रूप में स्वीकार करना होगा, तभी पर्यावरण की सुरक्षा तथा विकास संभव है।

आने वाले पीढ़ी हमारे समय को सम्मान के भाव से देखेगी। एक ऐसा युग जहाँ, शांति के लिए, आत्म–निर्भरता के लिए, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए रचनात्मक संघर्ष किया गया था। यह एक ऐसा युग था, जिसमें जीवन के आनंद का पूरी तरह से उपयोग किया गया।

*****